P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-10* January- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

व्यावसायिक बैंकों द्वारा कृषि वित्त से ग्रामीण आदिवासियों के आर्थिक जीवन में परिवर्तन–एक मूल्यांकन (बडवानी जिले के संदर्भ में)

Changes in the Economic Life of Rural Tribal from Agricultural Finance by Commercial Banks - an Assessment (in the Context of Barwani District)

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

आशीराम सस्त्या
सहायक प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर,मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

Banks have an important contribution in the economic development and social promotion of the country. The financial, monetary and credit requirements of the country are met by banks.These have considerable impact on the three sectors of the economy, primary sector, secondary and tertiary sector. Banks have played an important role in meeting the credit needs of the agriculture sector, the primary sector of the economy. The expansion of banking facilities in rural areas has ensured smooth availability of credit to rural farmers and played an important role in storing rural savings and utilizing them for productive activities. Due to the public welfare schemes being run by the banks for the rural tribals, there has been an unprecedented increase in the infrastructure of the villages and there has been a tremendous change in the lifestyle and amenities of the rural tribals.

देश के आर्थिक विकास और सामाजिक संवर्द्धन में बैंकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। देश की वित्तीय, मौद्रिक एवं साख सम्बंधी आवश्यकताओं की पूर्ति बैंकों द्वारा की जाती है। अर्थव्यवस्था के तीनों क्षेत्रों प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्र पर इनका काफी प्रभाव पडता है। अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र कृषि क्षेत्र की साख संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में बैंकों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। ग्रामीण क्षेत्रो में बैकिंग सुविधाओं के विस्तार से ग्रामीण कृषकों की साख की सुलभ उपलब्धता सुनिश्चित हुई है तथा ग्रामीण बचतों को संग्रहित कर उसका उत्पादक क्रियाओं के लिए उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बैंकों द्वारा ग्रामीण आदिवासियों के लिए चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं से गांवों की आधारभूत संरचना में आषातीत वृद्वि हुई है तथा ग्रामीण आदिवासियों की जीवनशैली और सुख सुविधाओं में बेहद परिवर्तन आया है।

मुख्य शब्द : आर्थिक जीवन, सामाजिक संवर्द्वन, मौद्रिक एवं साख नीति, वित्तीय पोषण, प्राथमिकता क्षेत्र (कृषि), दीर्घकालीन एवं मध्यकालीन ऋण, ऋणग्रस्तता।

Economic Life, Social Enhancement, Monetary And Credit Policy, Financial Nutrition, Priority Sector (Agriculture), Long Term And Medium Term Loan, Indebtedness.

प्रस्तावना

देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है। बडवानी जिले के ग्रामीण आदिवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। यहां की लगभग 90 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है और इससे प्राप्त होने वाली आय से अपना जीवन निर्वाह कर मूलभुत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम हुवे है। कृषि क्षेत्र से यहां के मूलनिवासियों के आर्थिक विकास के साथ–साथ रोजगार, खाद्य और पोषण सामग्री उद्योग धंधों को कच्चा माल, पशु को चारा तथा वनोपज प्राप्त होता है। इस प्रकार कृषि क्षेत्र ग्रामीण आदिवासियों की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था पर व्यापक रूप से प्रभाव डालती है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही योजना तथा बैंकों द्वारा वित्तीय पोषण से ग्रामीण आदिवासियों के आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसी महत्व को ध्यान में रखकर भारतीय बैकों को ग्रामीण क्षेत्र से जोडा गया और आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीण आदिवासियों के लिए सरकारी कल्याणकारी योजनाएं क्रियान्वित की गयी परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों को विकसित करने तथा कमजोर वर्ग के जीवन स्तर को ऊपर उठाने में बडा योगदान मिला।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में व्यावसायिक बैंकों द्वारा कृषि वित्त से ग्रामीण आदिवासियों के आर्थिक जीवन में परिवर्तन– एक मूल्यांकन (बडवानी जिले के संदर्भ में) शीर्षक से निम्न उद्देश्यों से जानने का प्रयास किया गया है।

शोध पत्र के उद्देश्य

1. व्यावसायिक बैंकों की कृषि वित्त संबंधी योजनाओं का अध्ययन करना।
2. व्यावसायिक बैंकों द्वारा जिले के ग्रामीण आदिवासियों को दिए गए कृषि ऋण के वितरण, वापसी की स्थिति एवं ऋण के उपयोग का अध्ययन एवं समीक्षा करना।
3. जिले के ग्रामीण आदिवासियों का व्यावसायिक बैंकों से कृषि वित्त का उपयोग करने के पूर्व तथा कृषि ऋण प्राप्त करने के पश्चात उनके जीवन पर पडने वाले आर्थिक विकास के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. जिले की कृषि क्षेत्र की समस्याएं एवं कृषि क्षेत्र के विकास के लिए किए जा रहें प्रयासों का अध्ययन करना एवं कृषि समस्याओं को दूर करने हेतु सुझाव देना।

साहित्य का पुनरावलोकन

1. सवेसिंह मेडा–जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन
2. शिल्पी श्रीवास्तव, डा. एस. एस.विजयवर्गीय–क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक के हितग्राहियों का आर्थिक मूल्यांकन
3. दीपिका यादव–भारत में बैंकिंग विकास की अवस्थाएं
4. ज्योति बरडे, डा. सपना सोनी–ग्रामीण बैंकों के माध्यम से रोजगार एवं साख की पूर्ति।

शोध प्रविधि

शोध पत्र हेतु समंकों का संकलन जिले का अग्रणी बैंक बैंक ऑफ इण्डिया से किया गया है। शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का प्रयोग किया गया है। समंकों के सकलन हेतु बैंक की शाखाओं के प्रबन्धको व कर्मचारियों से प्रत्यक्ष वार्तालाप व साक्षात्कार व अनुसूची के माध्यम से किया गया। समंको के सकलन के पश्चात् इन्हें व्यवस्थित एवं अर्थपूर्ण बनाने के लिये इनका संपादन किया गया है। इस प्रकार शोध पत्र हेतु प्राप्त समंकों को विभिन्न तालिकाओं में वर्गीकृत कर जिले की व्यावसायिक बैंकों द्वारा ग्रामीण आदिवासियों को प्रदत्त ऋण के उपयोग संबंधी विश्लेषण के साथ साथ ऋण वसूली की स्थिति और इनका ग्रामीण आदिवासी के आर्थिक जीवन में परिवर्तन पर अध्ययन एवं समीक्षा की गयी है।

क्र.	बैंक का नाम	शाखा संख्या	2003		2004		2005		2006		2007	
			जमा	अग्रिम	जमा	अग्रिम	जमा	अग्रिम	जमा	अग्रिम	जमा	अग्रिम
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13
1	बैंक ऑफ इण्डिया	10	825854	586835	988978	681212	1090781	713764	1310100	961600	711958	53336
2	स्टैट बैंक ऑफ इन्दौर	10	1420055	922975	1679989	1241639	1999594	1345548	2018800	1887300	121952	66377
3	भारतीय स्टैट बैंक	4	142882	53158	274011	68454	296580	120000	556100	192800	69068	47649
4	नर्मदा मालवा ग्रामीण बैंक	16	407630	191093	529729	212948	520528	249299	647500	373100	310917	156094
5	कृषि एव ग्रामीण विकास बैंक	07	17658	93671	21327	107404	21840	123680	65000	136600	14093	92578
	कुल	47	2814079	1847732	3494034	2311657	3929323	2552291	4597500	3551400	1227988	416034

तालिका 1.1

बडवानी जिले की बैंकवार जमाओ/अग्रिमों का विवरण राशि (हजारों में)

स्त्रोतः–जिले का अग्रणी बैंक बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा प्राप्त सूचनाओं पर आधारित।

तालिका 1.1 में बडवानी जिले की बैंकवार जमाओं/ अग्रिमों का विवरण दिया गया है–उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से निम्न तथ्य स्पष्ट होते है

1. जमाओं की स्थितिः– जिले का अग्रणी बैंक बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पांचों बैंकों की जमाओं में निरंतर वृद्वि हुई है । वर्ष 2003 में पांचो बैंकों की कुल जमाएँ 2814079 (हजारो में) थी जो बढकर वर्ष 2004 में 3494034 हो गई। यह गत वर्ष की जमाओं की तुलना में 24.16 प्रतिशत वृद्वि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 2005 में पांचों बैंकों की कुल जमाएँ 3929323 थी जो बढकर वर्ष 2006 में 4597500 हो गई। यह गत वर्ष की जमाओं की तुलना में 17 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 2007 में भी पांचों बैंकों

की कुल जमाओं में वृद्वि हुई है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पांचों बैंकों की कुल जमाओं में प्रतिवर्ष वृद्वि हुई है।

2. व्यावसायिक बैंकों की अग्रिम राशि का वर्णनः– बडवानी जिले में चयनित पांचों बैंकों की अग्रिम राशियों का वर्णन किया गया है। बैंकों की कुल अग्रिमों में निरंतर वृद्वि हुई है। वर्ष 2003 में पांचों बैंकों की कुल अग्रिम राशि 1847732 (हजारो मे) थी जो बढकर वर्ष 2004 में 2311657 हो गई। यह गतवर्ष की अग्रिमों की तुलना में 25.10 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 2005 में पांचों बैंकों की कुल अग्रिम राशि 2552291 थी जो बढकर वर्ष 2006 में 3551400 हो गई। यह गतवर्ष की अग्रिम राशि की तुलना में 39.14 प्रतिशत की वृद्वि हुई है। इसी प्रकार वर्ष 2007 में भी पांचों बैंकों की कुल अग्रिम राशि में वृद्वि हुई है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पांचों बैंकों की अग्रिम राशि में प्रतिवर्ष वृद्वि हुई है।

उपर्युक्त विवरण तालिका 1.1 में दी गई पांचों बैकों की वर्षवार कुल जमाओं एवं अग्रिमों का विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि चयनित पांचों बैकों द्वारा सभी प्रकार की बचतो को जमा करने एवं उसका अग्रिम भुगतान करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जिले की सभी चयनित बैंकों द्वारा नयी जमाएं एकत्रित करने में सफल रहें है। बैंको की जमा राशि में पर्याप्त वृद्वि का क्रम दिखाई देता है। इस प्रकार बडवानी जिलें में व्यावसायिक बैकों की कुल जमाओं/अग्रिमों की स्थिति संतोषजनक कही जा सकती है।

कृषि वित्त से ग्रामीण आदिवासियों के जीवन पर प्रभाव

बैंकों द्वारा कृषि वित्त से ग्रामीण आदिवासियों के जीवन स्तर पर क्या प्रभाव पडा है या वित्त से उनके जीवन में क्या व्यापक परिवर्तन किया जा सकता है, इनका आकलन निम्न बिंदुओं के माध्यम से किया गया है –

1. आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में परिवर्तन
2. कृषि लागत एवं आय पर प्रभाव
3. कृषि उत्पादन प्रकिया में अन्तर
4. ग्रामीण बेरोजगारों पर प्रभाव
5. शिक्षा और स्वास्थ्य पर प्रभाव

सुझाव

1. जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का विस्तार किया जाना चाहिये जिससे ग्रामीण आदिवासियों के मुख्य व्यवसाय कृषि के विकास को सुनिश्चित तौर पर गति प्रदान करने में सहायता मिलेगी।
2. ऋण स्वीकृति, वितरण एवं वसूली की प्रक्रिया सरल हो।
3. कृषि साख की पूर्ति आवश्यकतानुसार की जाये जिससे ग्रामीण आदिवासियों के सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक विकास होगा।
4. शासन की समस्त योजनाओं को ग्रामीण तक पहुॅचाने के हर संभवतः प्रयासकर लोगो को योजनाओं से लाभान्वित किया जाये।
5. जिले में जंगलों के क्षेत्रों को सुरक्षित रखते हुए आदिवासियों को मूलभुत सुविधाएॅ दिलाने के लिये सरकारी व गैर–सरकारी अभियानों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

1. ग्रामीण आदिवासियों को ट्रैक्टर, कृषि उपकरण आदि खरीदने के लिए दीर्घकालीन ऋण, बैल, दुधारू पशु, पंम्पिंग सेट आदि क्रय करने के लिये मध्यकालीन ऋण तथा रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, उन्नत बीज आदि क्रय के लिये अल्पकालीन ऋण वितरित किये गए है जिससे कृषि विकास में तेजी आई तथा उत्पादकता में भारी वृद्वि हुई।
2. ग्रामीण आदिवासियों की जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन हुआ है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों मे बैंकिंग सुविधाओं के विस्तार होने से आदिवासियों एव बैंकों के मध्य लेन–देन के व्यवहार में सुधार हुआ है अर्थात बैंकों से लिये जाने वाले ऋणों में निरंतर वृद्वि हो रही है।
4. ऋणग्रस्तता जैसी गंभीर समस्या से ग्रामीण आदिवासी कृषकों को छुटकारा मिला है क्योंकि बैंकों द्वारा अब सिर्फ 5 प्रतिशत से भी कम ब्याज दर पर ऋण दिया जा रहा है जबकि अन्य स्त्रोतों जैसे साहूकार, महाजन से ऋण लेने पर 25–40 प्रतिशत वार्षिक ब्याज चुकाना पडता था।
5. कृषि की परम्परागत प्रणाली की जगह उत्पादन में नवीन विकसित कृषि तकनीक एवं मशीनों का प्रयोग करने से उत्पादन लागत में कमी तथा उत्पादन मात्रा में वृद्वि हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *www.agriculture.mp.nic.in*
2. *www.agrimachinary.gov.in*
3. *बैंक ऑफ इण्डिया जिला अग्रणी बैंक जिला बडवानी*
4. *वार्षिक साख योजना वर्ष 2002–03*
5. *वार्षिक साख योजना वर्ष 2003–04*
6. *वार्षिक साख योजना वर्ष 2004–05*
7. *प्रतियोगिता दर्पण।*